रात्रि क्लास 26-6-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

गार्डेन ऑफ अलाह बनना है। गार्डेन ऑफ फ्लावर, फॉरेस्ट ऑफ शैतान कहते हैं ना। डैविल आसुरी सम्प्र० भ्रष्टाचारी। यह अक्ष सभी एक के होते है। परन्तु यह तुम ही समझते हो। भ्रष्टाचारी किसको, श्रेष्ठाचारी किसको कहा जाता है। यह सिर्फ तुम जानते हो। पहले कुछ भी नहीं जानते थे। जंगली जनावर थे। इस पढ़ाई और उस पढ़ाई में रात-दिन का फर्क है। हम अपने गवर्मेन्ट स्थापन कर रहे हैं। यह समझते जाओ। तुम युक्ति से वह्मल का पादर लगा सकते हो। कह सकते हो। अन्दर में पक्का करते रहो। पाण्डव और कौरव नाम तो है ना। तुम पण्डे रास्ता बताते हो। शान्तिधाम ले जाते हो। सच्ची यात्रा वह है। तीर्थ में मनुष्य पवित्र बनने जाते हैं। गंगा स्नान करते हैं, अमृत पीते हैं। बच्चे बाप को याद करने का भी पुरुषार्थ करते रहते हैं। बच्चे सर्विस कर के आये हैं। तुम ईश्वरीय सर्विस जानते हो। जिन2 का पार्ट है वह ईश्वरीय सर्विस में लगे ही रहते हैं। आगे चल कर तुम देखेंगे सर्विस में खुशी से मदद करते रहेंगे। बाप आकर बच्चों को धीर्य देते हैं। समझते हो सुख दुःख का खेल है। बाप संगम पर ही आते हैं। बाप आकर सभी को सुखधाम-शान्तिधाम का मालिक बनाते हैं। ड्रामा के राज़ को भी तुम जानते हो। कहते हैं 3000 वर्ष पहले दुनिया पैराडाईज थी। परन्तु बन्दर है भारतवासियों ने इतने बड़े गपोड़े बैठ लगाये हैं। फिर सच्चाई सिध होती रहेगी। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी फिर से रिपीट होती रहेगा। तुम्हारे दिल में है हम चक्के कैसे लगाते हैं। फिर यह ज्ञान सतयुग में नहीं होगा। वहां न ज्ञान है न भक्ति होती। ज्ञान का फल है। ज्ञान मिलता ही है संगम पर। तो अभी बाप बच्चों को आप समान बना रहे हैं। जो जो ब्राहमण बनते हैं, यह है हाईएस्ट पोजीशन तुम्हारा। देवताओं से भी हाईएस्ट। यह तो क्लीयर है। तुम समझते हो हम एक्टर्स हैं। एक भी एक्टर निकल नहीं सकता। जितनी भी संख्या है। यह भी समझते हैं सतयुग में बहुत ही थोड़े मनुष्य होते हैं। सतयुग आदि में क्या होगा। फिर भी राजधानी है ना। पहले यह होंगे इन की प्रजा भी होगी फिर=वृध बुधि को पाते हैं। आगे चलकर तुम देखेंगे क्या होता है। मीठे2 बच्चों को नालेज बहुत ही अच्छी मिल रही है। जो समझते जाते हैं बुधि को पाते जाते हैं। भल और कुछ न समझे। भगवान तो कहते हैं ना। जानते हो वह निराकार है। हम भी निराकार थे। बाबा भी निराकार। फिर यहां आकर पार्ट बजाते हैं। बोलो यह नालेज तुमको और कहां भी नहीं मिलेगा। यह दिव्य-दृष्टि ने बनाई है। हम तो जड़पत्थर बुधि थे यह ब्रहमा भी पत्थर बुधि था। इन में बाबा ने प्रवेश किया है फिर पारस बुधि बनना है। हर्जा नहीं है कहने में। श्रीश्री 108 तो यह है ना। परन्तु हम कहते थोड़े ही हैं। सच्च तो सच्च है लिखने की क्या दरकार है। तुम पढ़ते रहते हो जानते हो। तुम बच्चों की बुधि में रहना है शिव बाबा हमको पढ़ाते हैं। शिव बाबा को ही याद करना है। जाप्ती तो कुछ नहीं। बच्चों को यही पक्का कराना है। अवतारें हैं। सिर्फ शिव बाबा को याद करो। दैवीगुण धारण करो तो तुम विश्व के मालिक बन जावेंगे। बाप धीर्य देते हैं। 21 तो क्या 40-50 जन्म कुछ भी दुःख नहीं। कितना काल का डर रहता है। वहां काल को आने का हुकुम ही नहीं है। खुशी से गर्भ में जावेंगे। बाबा को खुशी है ना शरीर छोड़ जाकर बच्चा बनुंगा। खुशी मैडालियां मारनी चाहिए बच्चों को। ब्राहमण हैं सब से उंच क्योंकि बाप पढ़ाते हैं। तो वह नशा होना चाहिए। बाप आकर आज्ञाकारी सर्वेन्ट बना है तब तो नमस्ते करते हैं ना बच्चों को। बच्चों के आगे बाप बड़ाई क्या दिखावेंगे। कितनी बड़ी स्थापना होती है। शिव बाबा को फिकरात होगी। इनका सत बाबा के साथ कितना नज़दीक में संग है। अनेकबार यह स्थापना का कार्य किया है उनके संग में यह भी समझते हैं यह तो कामन बात है। जैसे कल्प पहले स्थापना हुई थी, जो विघ्न आद पड़े थे वह पड़ेंगे। साक्षी हो देखना है। बाप के श्रीमत पर चलना है। बाप को फालो करो। बाप कहते हैं मेरे को फालो याद से करना है। बाकी एक्टविटी से जैसे यह कर्म करते हैं उनको फालो करो। यह बाबा तो कब किसको गुसा करता नहीं। मारता नहीं। प्यार से समझाते रहते हैं। सदैव बच्चे 2 ही अक्षर मुख से निकलता रहता है। बच्चों को शिक्षा भी देनी है। अच्छा बच्चों को गुडनाईट और नमस्ते।